NAME	:	ADNAN BISMILLAH
SUPERVISIOR	:	DR. C. D. YADAV
DEPARTMENT	:	HINDI
TITLE OF THE THESIS	:	SAMKALEEN MEDIA AUR SAHITYA KE ANTAHSAMBANDHON KA ADHYAYAN

KEYWORDS	:	मीडिया, भूमण्डलीकरण, संस्कृति, बाज़ारवाद, उत्तर–आधुनिकता

ABSTRACT **(शोध सार):**

भारत में पत्रकारिता की शुरुआत अंग्रेजी शासन के समय हुई। अंग्रेजों के खिलाफ देशवासियों को एकजुट करना तथा उनकी नीतियों से समाज को अवगत कराना उसका मुख्य लक्ष्य था। समाज सुधार भी उनके मुख्य लक्ष्य में था। अंग्रेज़ी शासन के दौर में देश में आधुनिकता का उदय हुआ। विसंगतियों, कुरीतियों, आडम्बरों आदि से समाज को मुक्त कराने में पत्रकारिता ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद मीडिया का स्वरूप परिवर्तित हुआ। सामाजिक समानता एवं विकास की चुनौतियों से उसका सामना हुआ। लेकिन इस दौर में मीडिया मिशन से प्रोफेशन में बदलने लगा। बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में भूमण्डलीकरण और उदारीकरण के कारण मीडिया का तेजी से विकास हुआ। वह तकनीकी रूप से बहुत सक्षम होता गया। अब मीडिया प्रेस तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वह रेडियो से आगे बढ़कर टीवी तक विस्तृत हो गया।

वर्तमान समय में मीडिया का व्यवसायीकरण हो गया है। खबरें खरीदी व बेची जा सकती हैं। उन खबरों से समाज पर पड़ने वाले प्रभाव का महत्व नहीं रह गया है। महत्व मात्र व्यवसाय का रह गया है। मीडिया प्रतिष्ठानों को सिर्फ अपने आर्थिक लाभ से मतलब है।

वर्तमान में पूरे विश्व में भूमण्डलीकरण एक स्थिति और शब्द भर नहीं है। यह एक संस्कृति है। पूर्व पूंजीवाद और नवउदारवाद, नवउपनिवेशवाद और उत्तर–साम्राज्यवाद की विचार–क्रान्तियों ने भी परम्परागत प्रतिमानों को नेस्तनाबूद कर दिया है। साहित्य में उत्तर–संरचनावाद, विनिर्मितिवाद और नव्य–फ्रायडवाद ने एक क्रान्ति ही उपस्थित कर दी है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि मीडिया का गहरा प्रभाव समाज और साहित्य पर पड़ा है। आज के समाज की बदली हुई तस्वीर का श्रेय समकालीन मीडिया को है। निश्चित रूप से मीडिया ने समाज और साहित्य को प्रभावित ही नहीं किया, बल्कि परिवर्तित भी किया है।

मीडिया ने समाज में हो रहे सांस्कृतिक परिवर्तन को बखूबी समझा है। पश्चिमी सभ्यता के बढ़ते प्रभावों के अनेक पक्षों को उजागर करने का कार्य मीडिया ने किया है तथा समाज में पनप रही विसंगतियों को भी उजागर किया है। मीडिया से साहित्य भी प्रभावित हुआ है। मीडिया और साहित्य में तेजी से आए इस बदलाव के पीछे का महत्वपूर्ण कारक वैश्वीकरण और बाजारवाद भी है, जिसने समाज में एक अभूतपूर्व परिवर्तन ला दिया है। सिर्फ समाज ही नहीं, समाज और साहित्य का दर्पण कहे जाने वाले मीडिया को भी परिवर्तित किया है, जिससे साहित्य और मीडिया दोनों ही व्यवसायिकता के दौर में पहुंच गए हैं।

वस्तुतः समाज में आए बदलाव के लिए बाजारवाद और मीडिया दोनों ज़िम्मेदार हं। क्योंकि बाजारवाद को फैलाने में मीडिया का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इस प्रकार मीडिया से समाज अनेक रूपों मं प्रभावित हुआ है तथा साहित्य में भी आधारभूत परिवर्तन हुए हैं। साहित्य में नए प्रयोग, नई रचना और नई शैलियां इसका उदाहरण हैं।

Major Finding of the Story **(अनुसंधान की प्रमुख खोज):**

पिछले बीस-तीस वर्षों में भूमंडलोकरण, आर्थिक उदारीकरण और बाजारवाद ने भारतीय समाज, राजनीति और संस्कृति व साहित्य को गहराई के साथ प्रभावित किया है। आज साहित्यिक रचनाओं के पाठ और पुनर्पाठ के लिए संरचनावाद, उत्तर-संरचनावाद, अन्तर अनुशासनात्मक, अन्तरपाठीयता आदि थियरियों का सहारा लिया जा रहा है। यानी अब रचनाओं के पाठ या पुनर्पाठ के लिए रचनाकार और उसके वैचारिक दृष्टिकोण को तलाशने की जरूरत नहीं है। आज मीडिया जीवन का महत्वपूर्ण अंग बन चुका है। अपनी संदेश सेवा के जरिये संस्कृति में हस्तक्षेप करता है और नए विमर्शों का निर्माण करता है। मीडिया के केन्द्र में उपभोक्ता है और पूरे बाजार की नजर उसी की ओर लगी हुई है। मीडिया एक ओर भाषायी विमर्श रचता है तो दूसरी ओर सबसे आगे रहने वाला चैनल उस भाषा का उपयोग करते हुए उसके विचार और प्रसार का कोई ठेका नहीं लेता। यानी मीडिया केवल प्रचलित भाषा को अपनाता है, चाहे वह बाजारू भाषा हो या फिर प्रशासनिक भाषा। उसे केवल अपनी टीआरपी का खयाल रहता है। उस भाषा के प्रयोग से समाज और संस्कृति पर क्या प्रभाव पड़ता है? उसे इस बात से कोई मतलब नहीं होता है। उपभोक्तावादी संस्कृति ने साहित्य, मीडिया और समाज का पूरी तरह से प्रभावित किया है।